also the rise in prices of inputs by which they have to do farming. They are also facing the consequences of rise in prices. Some is the case with agricultural labour in lakhs and millions all over the country. They are being fleeced because of the ever-increasing rise in prices of essential commodities which is being brought about in this country by the wrong economic policies adopted by the Government, the various Budget formulations and the unlimited deficit financing and what not.

The rise in prices is not the concern of only a partcular section or a particular category or a particular lass of people. It is a question which affects the middle-class, as I stated. They find it difficult to make both ends meet with whatever they earn, whatever they get from the Government as salary. All categories of people are very much affected by the rise in prices. This malady in the economy is eatng the very health of this nation. That is why this resolution of mine has its importance. It is a resolution which is not confined to any particular section of people. It is a national question as to how we can circumvent the situation. With all our efforts in the last so many years, with all sermons of building a welfare society, with all our promises in the electon manifesto and with all the promises of the Government that works, unfortunately, the Government is wrecking the economy and it has failed to check rise in prices and to see that millions of our people are freed from the clutches of rise in prices of essential commodities.

Now, the question is: How is the price mechanism working in this country? What is the basic reason for this price increase? While the Budget debate was going on and also during the discussion on certain Calling Attention Notices, it had been argued that the wholesale price index is coming down and that it is not being reflected in the all-India consumer price indev because of time-lag. But what is the actual experience of the commen people who just depend upon the retail shops for essential commodities?

18 hrs.

The statistics that have been poured in regarding the earlier regime's period and also the present regime's period, do not reflect the actual life or the actual day-to-day livng of the common man.

Whatever may be the statistical jugglery that is being made, on the overall consumer price indices, the All-India Consumer Price Index reflects what it is and that is why Government has to pay higher dearness allowance instalments to the Central Government employees. That itself proves that the rise in prices is so high that it s playing havoc with our economy and with our community.

MR. SPEAKER: You may continue next time.

SHRI K. A. RAJAN: Thank you, Sir.

18.02 hrs.

DISCUSSION RE. FUNCTIONING OF ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, NEW DELHI

श्री रामविलास पासवान (हाजीपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम लोग एक ऐसे विषय पर चर्चा कर रहे हैं जिस पर आज तक चर्चा नहीं हुई है जब कि इस इंस्टीट्यूट को बने हुए 26 साल हो गए हैं ।

अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान दिनांक 4 मार्च की ओर ले जाना चाहूंगा, जिस दिन मैंने इस सदन में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के संबंध में गंभीर आरोप लगाए थे । उस दिन मैंने नियम 377 के अधीन यह विषय उठाया था, आपकी अनुमति से उठाया था और आपने उसको उठाने की स्वीकृति दी थी ।

सदन में उठाए गए मामले को सड़क पर लाने की कोशिश की गई, जिससे यह भी हो सकता था कि यदि यह मामला साबित नहीं होता तो आपके ऊपर भी आंच आ सकती थी कि स्पीकर साहब ने बिना सोचे समझे इस गंभीर मामले को सदन में उठाने की स्वीकृति कैसे दे दी । तो यह मेरा पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि मैंने जो सदन

[श्री रामविलास पासवान]

में चार्ज लगाए थे, उनको मैं साबित करूं।

अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं यह कहूंगा कि मैंने उस दिन सदन में कहा था कि हृदय शल्य विभाग में एक डाक्टर को आंखों की बीमारी है, जिससे उन्हें कम दिखलाई पड़ता है। मैंने 5 तारीख के अखबारों में और अन्य रिपोर्ट्स में भी पढ़ा था, उनमें भी यही कोड किया गया था कि :—

I reject it—

अब मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि किस कोने से, कहां से यह मामला उठना शुरू हो गया कि :—

"Shri Ram Vilas Paswan told one doctor is blind, one doctor is blind".

अंधा आदमी कैसे आपरेशन करेगा, कैसे वह सर्जन बन सकता है। मैंने कहा था कि डाक्टर को कम दिखलाई पड़ता है, उसको आंख की बीमारी है, एक डाक्टर को मिर्गी की बीमारी है और जो मेन मुद्दा था, मेन इशू थी वह यह थी कि एक हरिजन नौजवान, एक गरीब नौजवान जो 18000 रुपए लाता है किसी तरह से अपना घर-बार बेचकर कि उसके हार्ट का आपरेशन हो जाए, उसने 8 यूनिट ब्लड जमा किया, उसके बाद भी उसको मृत्यु हो जाती है डाक्टरों की लापरवाही की वजह से—यह मैंने आरोप लगाया था। मैं चाहूंगा कि सर्वप्रथम इस आरोप को साबित करूं। इस बारे में मैंने विभिन्न समाचार-पत्रों में भी देखा है और कई प्रिविलेज मोशन भी आपके पास पेंडिंग है।

जब मेंबर कोई चीज पार्लियामेंट में कहता है, जवाबदेही के साथ कहता है तो अधिकारी का कर्तव्य है कि कंसर्निंग मिनिस्टर के माध्यम से सफाई देने का काम करे। मेंबर्स को प्रिविलेज है कि वह अपनी बात को सदन में निर्भीकता-पूर्वक रख सकता है। शकधर साहब ने तो अपनी किताब में यहां तक कहा है कि चाहे बेसलैस हो क्यों न हो मेंबर को बात कहने का अधिकार है। इसमें तो बेस है, मंत्री जी ने कहा है कि बेसलैस है, मैं साबित करूंगा कि यह बेसलैस नहीं है, लेकिन मेंबर किसी सवाल को उठाए और बाहर हंगामा करने की कोशिश की जाए तो कोई भी मेंबर इस स्थिति में नहीं होगा कि वह किसी के खिलाफ आवाज उठा सके। कल किसी ठेकेदार के खिलाफ कोई यहां आवाज उठाएगा तो सांसद के घर पर अगर प्रदर्शन हो जाएंगे तो पार्लियामेन्ट की क्या डिग्निटी रहेगी ? आप देखें कि किस तरह से गलत चीजें समाचार पत्रों में दिनवाई गई हैं। यह डाक्टरों के द्वारा किया गया है। मंत्री महोदय ने दूसरे सदन में जा कर कह दिया कि उस में डाक्टरों को कहीं कोई लापरवाही नहीं थी। आल इंडिया मेडीकल इंस्टीट्यूट के ओरिजनल डाकूमेंटस मेरे पास है जिन की मैंने फोटोस्टेट कापी आपके यहां दी है। मैं आग्रह करता हूं कि सदन के पटल पर मुझे इसको रखने की इजाजत दी जाए।*

सब से पहले वह अस्पताल में 2-1-81 को जाता है। यह आरोप लगाया है कि वह मेरा रिश्तेदार हो सकता है। मेरे द्वारा भेजा गया है। यह बिल्कुल बेसलैस है। वह 184 नार्थ एवेन्यू में सी पी आई के एम पी श्री सूर्य नारायण सिंह के यहां ठहरा हुआ था। उसका 1500 रुपया नार्थ एवेन्यू पोस्ट आफिस में जमा है। एड्रैस भी पोस्ट आफिस में 184 नार्थ एवेन्यू का दिया हुआ है। अफसोस की बात है कोई गरीब आदमी शेड्यूल्ड कास्ट का आदमी जिस ने घर बेच कर अठारह हजार रुपया जमा किया है, वैसे आदमी के लिए यदि कोई मेम्बर सिफारिश करता है तो उसका भी गलत अर्थ लगाया जाता है। ऐसा करके वह कोई बुरा काम करता है ? 24-1-81 को जाता है इंस्टीट्यूट में। कहा जाता है कि 11-1-81 को आओ। उस दिन जाता है तो लिख दिया जाता है।

"Try standby...after three months".

उसके बाद वह 20 अप्रैल 1981 को जाता है तो कह दिया जाता है 22 तारीख 'Come on Wednesday' को आओ। 22 तारीख को जाता है तो कह दिया जाता है।

---

*The Speaker not having subsequently accorded the necessary permission, the documents were not treated as laid on the Table.

"Booked for admission on 15-1-1982".

उसके बाद फिर 15-1-82 को जाता है तो यह कहा जाता है कि वह टर्न अप नहीं हुआ। जो चिट दी गई है इंस्टीट्यूट के डाक्टरों द्वारा उसमें 15-1-81 को हस्ताक्षर है। वह जाता है और फिर कह दिया जाता 22-1-82 को आए। 22 जनवरी 1982 को जाता है। कहा जाता है

"To see Mr. Karkatta. Review on Friday for possible admission."

27 तारीख को जाता है तो कह दिया जाता है :

"To come for admission after blood donation."

बीच में 20-1-82 को वह 18000 रुपया जमा करता है

"Received Bank Draft of Rs. 18,000."

इसके पहले जब लड़का घर जाता है तो दो बार टेलीग्राम करता है। तार में लिखता है:

"Prof. N. Gopinathan, All India Institute of Medical Sciences, Ansari Nagar, New Delhi. Kindly refer R—61560 regarding Natho Paswan: reaching on fixed date for operation on 15th January, 1982'.

वहां से टेलीग्राम करता है। पन्द्रह तारीख को आता है जब उसको चिट दी जाती है। 22 तारीख को कहते हैं

"Come after blood donation."

24 तारीख को रविवार पड़ता है। 23 तारीख को इस वास्ते जाता है तो उसको कहा जाता है कि 25 तारीख को आए। 25 तारीख को जाता है अपने सम्बन्धियों के साथ तो कहा जाता है

"Donors sent—are unfit to donate".

तीन आदमियों का खून लिया जाता है तीन यूनिट। कह दिया जाता है दो आर अनफिट। फिर उसके बाद 27 तारीख को जाता। पर्चो पर फिर लिखा हुआ है डाक्टरों के ही हाथ से—

"Donors sent—are unfit to donate". Please send other relatives".

फिर उसके बाद 28 तारीख को दो यूनिट ब्लड देता है। उसके बाद फिर 29 तारीख को जाता है। तब कहा जाता है

"To arrange for blood donation and then come".

फिर उसके बाद 3 फरवरी 1982 को जाता है तो कहा जाता है कि तुम जो रिलेटिव लाए हो व बोगस है। गांव के मुखिया से लिखा कर लाओ कि ये तुम्हारे रिलेटिव हैं। अध्यक्ष महोदय, आप समझ सकते हैं कि बिहार का आदमी उसको भेजा जाता है, और गांव के मुखिया और मेडिकल अफसर के दस्तखत हैं। 3 तारीख को वह जाता है, 5 तारीख को वहां पहुंचता है और 6 तारीख को वहां का मुखिया ग्राम पंचायत राज, चकिया और थर्मल प्लांट का मेडिकल अफसर सर्टिफाई करता है "प्रमाणित किया जाता है श्री प्रेम पासवान, सुरेश पासवान एवं श्री सागर पासवान श्री नाथी पासवान, कुशल श्रमिक, बरौनी थर्मल पावर स्टेशन (बेगूसराय) के निकटतम सम्बन्धी हैं। (क्रमश: भतीजा, भतीजा एवं भाई) हैं। ये स्वेच्छा से नाथी पासवान की चिकित्सा हेतु रक्तदान करना चाहते हैं। वह ले कर पहुंचता है 8 तारीख को और जब इनके यहां जाता है तो कहते हैं कि उसको कुछ बीमारी हो गई है। और तुम जनरल ओ. पी. डी. में जाओ:

"To attend OPD for drainage and to come after getting clearance."

वह जाता है ओ. पी. डी. में उसी दिन। क्यों नहीं जब उसका ऑपरेशन जरूरी था तो उसका कैजुअल्टी में या इमरजेंसी में ऑपरेशन किया गया? उसको भेजा गया ओ. पी. डी. में और वहां मामूली दवाई लिख दी गई जैसे सल्फा, एनाल्जीन आदि, और कहा कि 7 दिन के बाद आओ। यह 8 तारीख की घटना है। 11 तारीख को मेरे पास आता है, आने के बाद उसकी हालत खराब थी तो मैंने मंत्री महोदय को टेलिफोन किया और बताया कि यह सब धांधली हो रही है आप इस पर ध्यान दें। मैं इनका शुक्रगुजार हूं इन्होंने कहा कि आप उसके सारे कागजात भेज दीजिये, मुझसे जहां तक हो सकेगा करूंगा। इनको टेलीफोन करने के पहले आयुर्विज्ञान संस्थान

[श्री रामविलास पासवान]

को टेलीफोन किया लेकिन मेरी डाक्टर से बात नहीं हो सकी। फिर मैंने टेलीफोन किया राम मनोहर लोहिया अस्पताल में और मैं वहां के डाक्टर को धन्यवाद देता हूं, मैंने कहा कि एम्बुलेंस भेज दीजिये, तुरन्त 5 मिनट में एम्बुलेंस आ गई जिससे उसको अस्पताल भेज दिया। इस बीच में आधा घंटे बाद मंत्री जी का टेलीफोन आया, इन्होंने कहा मैं आपका इंतजार कर रहा हूं। मैंने इनको कहा कि अब आप क्या मदद करेंगे, वह रोगी मर गया। यह मेरे पास पूरा प्रूफ है। और जब आप परिवार की चिट्ठी पढ़ेंगे उन्होंने कहा है कि राम विलास जी यह इंसटीट्यूट किस के लिये है? गरीब के लिये है या बड़े लोगों के लिये है? आज अगर मेरे पास प्रूफ नहीं होता तो मैं झूठा बन गया होता। उस गरीब ने एक एक पत्र को जमा कर के रखा। यदि यह कागज मेरे पास नहीं होते तो क्या होता? कह दिया गया कि वह डेट पर टर्न अप नहीं हुआ। तो यह सारे कागजात हैं आप देख लें। क्या ब्लड के अभाव में रोगी मरेगा? मंत्री जी आपने कभी सोचा है कि एक गांव का गरीब मजदूर कहां से 8, 8 रिश्तेदारों को ले कर जायगा ब्लड देने के लिये? और अगर कोई जाय भी तो कह दिया जाय कि अनफिट है। गरीब आदमी अस्पताल में आयेगा तो उसको कहा जायगा 8 युनिट ब्लड लाओ। तो वह कहां से लायेगा?

यहां रेडक्रोस सोसाइटी है। रेड क्रोस सोसाइटी के डा. तनेजा ने लिखा :

"Please accept 8 units of blood of Shri Natho Paswan, 30 years, male."

तो रेड क्रोस सोसाइटी में आपका ब्लड सैकड़ों यूनिट बह जाता है। कुछ दिन पहले अखबारों में निकला था कि गड्ढे में बहा दिया गया। लेकिन गरीब को ब्लड के अभाव में मार दिया जाता है, ऐसा क्यों है? यह मेरी समझ में नहीं आता। फिर ब्लड कितना लगता है? मैंने यह पता लगाया है कि कभी 8 यूनिट नहीं लगता है। मुश्किल से 2, 3 यूनिट लगता है। वह तो इसलिये लिया जाता है कि उसके रिश्तेदार हैं कि नहीं। 8, 8 आदमी गांव से कोई लायेगा? अगर आप भी हमारे स्थान में मान्यवर, रहते तो आपको भी दुख होता। इसलिए मेन इस्यू को साइड-ट्रेक कर देना, मेन समस्या पर चर्चा न करना और हल्के ढंग से कह देना कि पासवान ने कहा है कि वन इज ब्लाइंड एंड दि अदर इस सफरिंग फ्राम एपिलेप्सी, यह उचित नहीं है। मैंने उस दिन भी कहा था और आज भी कहना चाहता हूं कि मैंने जो आरोप लगाये हैं वह सही है और मेरा मेन मुद्दा इन बातों की तरफ ध्यान खींचना था। जिसके तहत एक गरीब की हत्या की गई। ऐसे एक दो उदाहरण नहीं हैं, इस तरह के उदाहरण भरे पड़े हैं। कल मैंने पार्लियामेंट में क्वेस्चन किया था कि एक साल में कितने मरीजों का एडमिशन हुआ और कितने लोगों की आपरेशन से पहले मृत्यु हो गई। जवाब आया है कि 8 आदमियों की।

मैं आपके सामने कुछ उदाहरण रखना चाहता हूं।

शिव चरण साहू:-सी आर नं. 5898, प्रवेश तिथि: 13-3-81, डिसचार्ज तिथि:-1-10-81, बैड नं. 9 ए बी 6, ए वी फिस्टुला। जिन डाक्टर के बारे में कहा जाता है कि वह एक्सपर्ट हैं, जब उन्हें दिखलाया गया तो उन्होंने कहा कि पांव काट दो। मैं डाक्टरों का विरोधी नहीं हूं। मुझे खुशी है कि मामले को बढ़ाने का चाहे कितना भी प्रयत्न किया गया हो, आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट की रेजिडेंट डाक्टर्ज एसोसिएशन लाख दबाव और थ्रेट्स के बावजूद और आल-इंडिया जूनियर डाक्टर्ज फेडरेशन, जिसके चालिस हजार मेम्बर्ज हैं, मेरे द्वारा लगाए गए आरोपों को सपोर्ट ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि फ्रेश चार्जिज भी लगा रहे हैं। जिन्हें सर्टिफिकेट दिया जाता है, उसने कहा कि पांव काट दो। डा. आई एम राव ने कहा कि मैं इसका इलाज करूंगा और आपको जानकर खुशी होगी कि उसका इलाज किया गया और दस दिन में वह आदमी चंगा हो गया और वह घूम-फिर रहा है।

नन्द किशोर:—उम्र 32 साल, रुमेटिक हार्ट डिजीज का रोगी था, 7 जनवरी, 1981 को कैथराइज किया गया, 24

जुलाई, 1981 को एडमिशन दिया, 17 सितम्बर, 1981 का वह आपरेशन के इन्तजार में अस्पताल में मर गया। इस बीच उसको कई बार एडमिट किया गया और कई बार डिसचार्ज किया गया।

रितेश:—उम्र 12 साल, बेड नम्बर ए वी 5-26, सी आर नं. 16658, उसको चार महीने तक वार्ड में रखा गया, आपरेशन नही किया गया, नवम्बर, 1981 में उसकी मृत्यु हो गई।

तुषार:—आसाम का छः महीने का बच्चा था सी. आर. नं. 9072. एडमिशन: 3-4-81; डिसचार्ज: 1-10-81, हृदय-रोग का रोगी था, छः महीने तक वार्ड में रहा, उसके पिता ने नौकरी छोड़ दी थी, लेकिन बिना आपरेशन के निराश हो कर लौट गया।

शान्ति पाठक:—सी आर नं. 18316, बैड नं. ए. 7-1. एडमीशन: 28-8-81, डिस्चार्ज: 5-1-82, आपरेशन के अभाव में मर गया।

शिवानन्द :—उम्र 12 साल, सी. आर. नं. 23926. बैड नं. ए. बी. 5, कान्जेनिटल हार्ट डिजीज, खून जमा कर चुका था, लेकिन अभी तक उसका आपरेशन नहीं हुआ है। पेपर में एक मामला आया है कि एक रोगी, दास डिपार्टमेंट में खांस रहा था, मगर डाक्टर ने उसका उपचार करने के बजाए ऐसा थप्पड़ मारा कि उसे साइकासिस हो गया।

इस तरह के बहुत से उदाहरण हैं।

अब मैं डा. गोपीनाथ पर आऊंगा। मैंने कहा कि साठ साल की उम्र है, कम दिखाई पड़ना स्वभाविक है। क्या मैंने किसी की इनटेग्रिटी पर डाउट किया? मैंने कब कहा कि कोई डाक्टर कम कम्पीटेंट है? मैंने आरोप लगाया था कि उन्हें आंख की बीमारी है। मंत्री महोदय ने विभिन्न समाचारपत्रों को क्यों नहीं देखा है? क्या मैंने यह कोई नया आरोप लगाया है— 24 मई, 1981 को समाचारपत्र में इन्स्टीटयूट के सम्बन्ध में लिखा गया कि यह एक क्रानिक केस है। यह मैंने नहीं लिखा था, बी. एम. सिन्हा ने लिखा था। मैंने जो चार्ज लगाया है, वह उससे बढ़ा हुआ चार्ज है। उस समय क्यों नहीं रिजेंटमेंट हुआ? क्यों नहीं इस्तीफा दिया गया? क्यों नहीं यह धमकी दी गई कि उस पत्रकार की पत्रिकारिता छीन ली जाए। रेजिडेंट डाक्टर्ज फेडरेशन ने मंत्री महोदय से सवाल पूछा है और जिसमें उन्होंने सिग्नेचर के साथ चार्ज लगाया है। डा. टण्डन ने कहा, टाइम्स आफ इंडिया के इण्टरव्यू में कि तीन महीने तक आंख के ट्रीटमेन्ट में थे। रेजिडेन्ट डाक्टर्स एसोसिएशन ने कहा:

Is it not true that he is suffering from eye disease?

उन्होंने क्वेश्चन किया। उन्होंने कहा आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में डाइगनोसिस हुआ और मद्रास में जो डा. बद्री प्रसाद फेमस आई स्पेशलिस्ट हैं उनके यहां जा करके आंख का इलाज करवाया। सबसे मोटा चश्मा जो मैक्सिमम पावर का होता है उसको इस्तेमाल करते हैं। पढ़ने-लिखने के लिए तो ठीक है लेकिन जो डाक्टर आपरेशन करता है, आपरेशन थिएटर में जाता है, जहां हार्ट को ओपन करके छोड़ दिया जाता है, जहां एक एक मिलीमीटर को एक्यूरेसी का महत्व होता है वहां पर यह कहां तक उचित होगा ? यही नहीं, मंत्री जी, फिर दूसरी जगहों के लिए आपने दूसरा कानून क्यों बनाया है कि दूसरे हास्पिटल्स में आई डिजीज वाले आई सर्जन नहीं हो सकते हैं ? इस नियम से आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट अलग क्यों है ? इसीलिए कि वह एक आटोनामस बाडी है ?

यह एक सर्कुलर है 25 मार्च, 1981 का, मिनिस्ट्री आफ हेल्थ एंड फेमिली प्लानिंग की ओर से जिसमें लिखा गया है अशोक तिवारी, केयर आफ डा. एम. एम. तिवारी, 13-सी, जनकपुरी, नयी दिल्ली को कि आपको कलर ब्लाइन्ड पाया गया इसलिए आप ठीक नहीं हैं। लेकिन क्या यही नियम आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट के लिए भी है? वहां के लिए

[श्री रामविलास पासवान]

भी यह नियम क्यों नहीं है? क्या इसलिए वह आटोनामस है और मन के अनुसार जो भी नियम होगा उसी को बनाकर चलेंगे? चाहे कोई अंधरा हो, लूला हो या लगड़ा हो सभी कुछ वहां पर चलेगा। आपका कानून एक समान होना चाहिए । सारी जगहों के लिए एक ही कानून होना चाहिए ।

डा. वेणु गोपाल के सम्बन्ध में भी कहा गया है । मैंने किसी डाक्टर का नाम नहीं लिया था लेकिन वेणु गोपाल के सम्बन्ध में कहा गया है। मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता । तमाम समाचारपत्रों में समाचार आया है, डाक्टर्स एसोसिएशन ने चार्ज लगाया है, डा. टण्डन ने अपने इन्टरव्यू में कहा है कि दो बार एक्सरे लिया गया। एक बार ई ई जी हुआ और दूसरी बार कुछ और जिसको कहते हैं वह हुआ। यह कहा गया कि आपरेशन थिएटर में मूर्छित नहीं हुए, बाहर मूर्छित हुए। यह भी कहा गया अमुक ड्रग्ज नहीं चली तो फिर कौन सी ड्रग्ज चली? रेजिडेन्ट डाक्टर्स ने बहुत अच्छा कहा है:

The illness of the two surgeons should have been frankly admitted.

उन्हें स्वेच्छापूर्वक कबूल करना चाहिये था कि मिर्गी एक ऐसी बीमारी है जिसके न तो आने के पहले कोई एलार्मिंग सिग्नल होता है और न बाद में उसका कोई पता लगा सकता है । (व्यवधान)

एक गम्भीर विषय यह है कि आज के समाचार-पत्रों में आया है कि डाक्टर के द्वारा, जो केस-शीट उसके विरुद्ध है उसको गायब करवा दिया गया है ताकि अगर कोई इंक्वारी हो तो वह फाइंडिंग न दे सके । आप चाहें तो आपकी जानकारी के लिए मैं उसका नम्बर भी बाद में दे दूंगा ।

मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि तीन आरोप लगाए थे जिन पर मैं आज भी अडिग हूं। मैं तो आपसे कहूंगा कि आप भ्रम में मत रखिए, आप एक्शन लीजिए। रेजिडेन्ट डाक्टर्स एसोसिएशन कहता है कि हमारा गला दबाया जा रहा है और हमको कम्पेल किया जा रहा है। क्या यह सही नहीं है कि 24 तारीख को डायरेक्टर ने बैठक बुलाई रेजिडेन्ट डाक्टर्स एसोसिएशन की और उनको कम्पेल किया कि तुम लिखो कि हम आपके साथ हैं ?

मंत्री महोदय, आप ने हरिजन युवक के सम्बन्ध में कह दिया कि रामविलास पासवान का आरोप गलत है । मुझे खुशी होती यदि आप उस पर चुप्पी लगा लेते । आप ने कह दिया कि "बेसलेस" है । बेस तो है, लेकिन लेस कैसे हो गया, आप को कहना चाहिए था कि लेस नहीं बल्कि मोर है । मैंने अपने 377 में डा. पीटर का आरोप लगाया था, वह मलेशिया के डाक्टर थे । उन्होंने अपने आरोप में कहा था कि वहां एक गिरोह बना हुआ है और वह गिरोह वहां किसी अच्छे डाक्टर को रहने नहीं देता है । उस के बारे में उन्होंने भारत सरकार को भी लिखा था और मलेशिया सरकार को भी लिखा था और मैडिकल इंस्टीच्यूट के डायरेक्टर को भी लिखा था । मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं--वह अपने जवाब में बतलायें--क्या आप ने कभी भूतपूर्व राज्य स्वास्थ्य मंत्री श्री जगदम्बी प्रसाद यादव का फाइल पर दिया गया नोट देखा है ? उन को इस बात का पता चला था कि यहां पर आपरेशन का जो सामान खरीदा जाता है वह बम्बई और दूसरी जगहों के मुकाबले मंहगा पड़ता है, उस का अधिक पैसा लिया जाता है। उनको पता चला था कि जो बल्व ओपन-हार्ट सर्जरी और क्लोज्ड हार्ट सर्जरी के लिए आता है, वह आता तो एक ही जगह से है फिर यहां उसका पैसा कैसे ज्यादा दिया जाता है । अखबार में निकला था कि यहां पर जो ग्लूकोज प्रयोग में लाया गया वह जाली था । कितने मरीजों पर उस का इस्तेमाल हुआ होगा ? बाद में उसको रोका गया और कहा गया कि उस फर्म से न लिया जाए, लेकिन फिर भी उसी फर्म से लिया गया । अगर विजिलेंस न रहता तो वह मरीज भी स्वर्ग सिधार जाता । श्री जगदम्बी प्रसाद यादव को यह भी मालूम हुआ था कि जो बल्व बच जाता है, जो उपयोग में नहीं आता है वह कभी भी रोगी को

लौटाया नहीं जाता । क्या कभी आपने इसका लेखजोखा किया है ?

मैं जानता हूं आप उन डाक्टरों को सर्टीफिकेट दे देंगे । मैं जानता हूं आप ताम्रपत्र भी दे देंगे, जितनी बड़ी डिग्री होगी, कहेंगे--"दिस इज दि प्राइड आफ दि नेशन ।" "इनके बगैर काम नहीं चल सकता ।" नवम्बर में पता नहीं उन को रिटायर करवायेंगे या नहीं करवायेंगे क्योंकि जो तोहफा आपने दिया है उस से तो लगता है--"देअर इज समथिंग बिहाइण्ड इट ।" उन के जाने के बाद लगता है इंस्टीचूट के पास कोई काबिल डाक्टर नहीं बचेगा । आप ने इतने सालों में ऐसे डाक्टरो को, स्पेशलिस्ट को पैदा ही नहीं किया । हमेशा तर्क दिया जाता है कि हमारे यहां वर्क-लोड ज्यादा है, सर्जन्ज का अभाव है । क्यों अभाव है ?

हार्ट-सैल में दो सर्जन्ज की पोस्टें क्यों खाली पड़ी हैं ? क्यों अभी तक उन पदों पर डाक्टरों की भरती नहीं किया गया, इस में क्या राज है? डाक्टर एसोसियेशन ने चार्ज लगाया है कि वह अपनी मानोपौली को कायम रखना चाहते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, आज जिस गरीब का ईशू मैंने उठाया है, जिस हरिजन का ईशू मैंने उठाया है--मंत्री भले ही उन डाक्टरों को माफ कर दें, ताम्रपत्र दे दें, लेकिन जितने गरीब लोगों की मौत हुई है यदि कहीं भगवान होगा तो वह कभी माफ नहीं करेगा ।

अध्यक्ष महोदय, सर्विस रूल्ज हुआ करते हैं जिन के अन्तर्गत लोगों को काम करना होता है । चूंकि यह तो आटोनामस बाडी है इस लिए हम हैदराबाद में जा कर एसाइनमैन्ट ले सकते हैं, रिटायर होंगे तो वहीं जायेंगे । मैं आप से कहना चाहता हूं--रेजिडेन्ट डाक्टर्स ने मांग की है, 30 पार्लियामैन्ट के सदस्यों ने, जिन में सभी पोलिटीकल पार्टीज के लोग हैं मुझे सभी हैं सभी लोगों ने मांग की है कि इस की जांच होनी चाहिए । मैं मंत्री जी से एक बात और जानना चाहता हूं--आप यह बतलाइये कि दूसरे अस्पतालों के कितने डाक्टर्स ने रिजाइन किया, हार्ट सैल विभाग के क्या और बहुत से डाक्टरों ने रिजाइन किया है ? आप की प्रशासनिक गड़बड़ी के कारण संस्थान के बगल में सफदर जंग अस्पताल है--क्या आप ने वहां के बारे में पता लगाने की कोशिश की है वहां कितने डाक्टर इस्तीफा दे चुके हैं? पिछले कुछ दिनों में वहां चार डाक्टरों ने इस्तीफे दिए हैं--मैं उन के नाम बतलाता हूं--

1. डा. पी. वी. दास, जो हार्ट-सैल विभाग के प्रधान थे ।

2. डा. डी. टी. दत्ता

3. डा. एच. एस. दहल

4. डा. पी. पी. वर्मा, फिजीशियन

दूसरे अस्पतालों में भी डाक्टर इस्तीफा दे रहे हैं, तो क्या उन डाक्टरों के प्रति आप की कोई सहानुभूति नहीं है । उन के सम्बन्ध में आप ने कभी नहीं सोचा कि क्यों इस्तीफा दिया है और आपको क्या करना चाहिए । जो आपके मन के लायक है, वह बहुत बढ़िया और ताम्रपत्र पाने लायक है और जो डाक्टर आप के मन के लायक नहीं है, वह मर जाए और उस को कोई देखने वाला नहीं है । मैं मंत्री महोदय से कहना चाहूंगा और बहुत आदर से कहना चाहूंगा कि मैं कोई नया चैप्टर नहीं खोलना चाहता हूं । हमारे ऊपर एलीगेशन लगाए गए हैं और एलीगेशन्स इस तरीके से लगाए गए हैं, जिनमें कोई सच्चाई नहीं और वे बिलकुल बेसलैस हैं और जो बात मैंने कही थी और मैं आज भी कह रहा हूं कि यदि मंत्री महोदय को उन के बारे में कोई शंका है, तो जांच करावें । मैं चाहूंगा कि मंत्री महोदय जब जवाब दें, तो सब लोगों की बात को सुन कर गोलमाल जवाब न दें । मैंने कैटेगौरीकली सारी चीजों को एक्सप्लेन कर दिया है और आज मैं इतनी दूरी तक ही सीमित रहूंगा और मंत्री महोदय से आग्रह करूंगा कि उन्होंने जो हमारे ऊपर आक्षेप लगाए हैं यह कह कर कि मेरा जो कहना था, वह बिलकुल बेमिसाल है और इस तरह से हम को और आपको भी इनडाइरेक्टली मेलाइन करने की कोशिश की है और एक प्रश्नवाचक चिन्ह लगाने का काम किया है, तो जब मंत्री

[श्री रामविलास पासवान]

महोदय जवाब दें तो एक एक करके प्रत्येक बिन्दु का जवाब दें ।

मैं यह फिर कहना चाहता हूं कि मंत्री महोदय, आप के हित में, देश के हित में और डाक्टरों के हित में भी यह था कि इंक्वायरी हो जाती और डाक्टरों को तो हंस कर यह कहना चाहिए था कि ठीक है, हमारे ऊपर चार्जेज लग रहे हैं

We are ready to face the charges.

उसी समय उनको यह कहना चाहिए था बजाए यह करने कि मैंन इस् को डाइवर्ट किया जाए । आप कहेंगे कि जो भी हो मैं इन्टरफियर नहीं करना चाहता हूं । आप इन्टरफियर मत कीजिए लेकिन मैं आपसे कहूंगा कि आप एक इम्पारियल इंक्वारी उसकी करा दीजिए । मैं तो यह कहूंगा कि पार्लियामेंट के जो मेम्बर डाक्टर हैं, हम लोग तो डाक्टर नहीं हैं लेकिन दोनों पक्षों में, उधर भी और इधर भी, डाक्टर हैं, और उधर डा. भाई हैं, आप इन्हीं लोगों की एक कमेटी बना दीजिए और जो तथ्य हैं उनके सामने आने दीजिए । अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूं कि तथ्य सामने निखर कर आएं और मैं मंत्री महोदय से करबद्ध प्रार्थना करता हूं कि आप इस तरह का ताम्रपत्र देने का काम छोड़िये और सच्चाई से ऊपर आइए और कम से कम एक इंक्वायरी तो करवाइए ।

इन शब्दों के साथ मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आप ने मुझे बोलने का समय दिया ।

DR. KRUPASINDHU BHOI (Sambalpur): Mr. Speaker, Sir. I was hearing with rapt attentin the speech given by the hon. Member, Shri Ramvilas Paswan. When I was hearing his eloquent speech I was reminded of one incident that occurred in our State. During the Janata regime in Orissa, one hon. Minister was called to inaugurate the Sports Meet. While addressing the gathering there, the hon. Minister had said "I am very happy to inaugurate your Sports Meet". He spoke in Hindustani. The

हिन्दुस्तान में तीन ठोस काम बहुत अच्छे हैं। एक है क्रिकेट, दूसरा है फुटबाल और तीसरा है टूर्नामेंट ।

hon. Member had said that he was unable to see. Now he is telling here that he has not told that the Doctor was blind. For the last 10 or 15 days, in all the newspapers, the allegation made by the hon. Member was that he was blind. Had he given a statement to the Press to the effect that he had not said that Dr. Gopinath was blind, the matter would have ended there. acts

He has just misquoted. The refractory error and colour blindness are two different things. In the case of colour blindness there is restriction in all the Institute for appointment of dctors to any such post. For refractory error there is no such rule or provision of the Government to bar any person to be employed in different surgery departments. So his hallucination should go with this explanation.

Sir, if you hear about how much operations both Dr. Gopinath and Dr. Venugopal have performed during the last year and what type of operations they are performing, you will be astonshed to know that India can produce such doctors in open-heart surgery also. They are doctors of international repute. Dr. Venugopal is a young and energetic chap. At the same time he is a bachelor. He is dedicated to the cause of heart patients in the country.

At the time of operation he got a severe backache. He was performing the operation for ten hours. After that there was some convulsion. The convulsion was not due to epilepsy. It was found after detailed investigation by a panel of doctors of AIIMS of natonal repute that it was due to Hypoglycaemia. If you don't take food for more than ten to twelve hours and is empty stomachs and you perform such long operations, with much of exertion Hypoglycaemia comes. It

is a case of lack of sugar below the normal level in the blood in the layman's term. Then definitely brain will suffer due to Hypoglycaemia and there will be no oxygen supplied to the brain as a result of which the person will become unconscious. If we consider that thing as epilepsy it is very wrong.

Sir, before allowing Shri Ram Vilas Paswan to raise this thing in the House, he should have begged apology before the House for levelling such wild remarks against the eminent doctor. This is very bad, Sir. The nation will not forgive us if a Member of Parliament is allowed to make such remarks against eminent doctors, who are not only of national but also of international repute. Therefore, I request the Hon. Speaker that before the Hon. Minister replies, the Hon. Member should feel sorry and he should beg apology before the House.

Sir, I definitely feel very sorry for the death of Sri Natho Ram Paswan. We must express our condolence to the bereaved family. There is no second opinion about it. But at the same time I would say that he did not die while being in the custody of Cardiac surgery. The patient died not due to this, but due to the infection of glutial abscess. Sir, cardia surgery cannot be undertaken with any infection in the body. This type of surgery is so sophisticated, so meticulous that Dr. Gopinath or Dr. Venugopal cannot give a certificate to a person suffering from this infection to be fit for operation. If a panel of doctors examined the patients in different departments, then they will also tell the patient is not fit to undergo the surgery. So, it is not the fault of Dr. Venugopal or of Dr. Gopinath.

Do you mean to say that it is the fault of the whole Institute? It is not like that. So, the deceased has died. not due to any heart complication or at the operation table. He has died due to glutial abscess and super-infection. That is what the report of the Willingdon Hospital says.

It is said that the patient was harassed. It is not a fact. I say this because in the cardio surgery unit, only 40 beds are available. They take, on an average, 23 days per person. So, they cannot accommodate in a single year, more than 400 to 500 patients. So, not one case, but thousands of cases are on the waiting list. Generally, complicated cases come to the cardio-surgery unit of the Medical Institute.

There are other institutes in the country, also doing open heart surgery. But they are not doing complicated surgery, as Dr. Venugopal and Dr. Gopinath do. These two doctors have successfully operated more than 32 cases of complicated nature. The records are there.

Sir, you will be astonished to know that one Bhaskara Putran who had a complicated ASD with total anomalous Pulmonary venous connection, was operated by Dr. Venugopal and Dr. Gopinath—who had operated 15 cases of this type. Out of them, all the patients except one have survived. In this type of cases, generally in USA one doctor has done four operations; and out of the four, only two have survived, and two have collapsed. It is an open heart surgery. If the mortality rate is less in AIIMS than the international figure, is it not a plus point, and a matter of pride for India?

Another most complicated case is that of one Mohanty from my State who had a clotted mitral valve. He was operated upon by Dr. Venugopal and Dr. Gopinath. These two doctors have conducted 12 such operations; and out of them, eleven are now in good condition. Similarly, an internationally renown cardio-surgeon, Dr. Bjork has conducted 16 such cases, out of whom he could operate only four; and out of the four, two have died. But here, out of 12, eleven have survived.

[DR. Krupasindhu Bhor]

So, we must see the merits and demerits of the doctors. Dr. Venugopal and Dr. Gopinath have conducted 400 or 500 open heart cardio surgery cases in a year. Out of them, 32 operations were more complicated ones. They have been published in international journals, in different countries. They have been commended, not only nationally but also internationally. Can this type of doctors of any country be called epileptic and blind by any person or by any Member of Parliament?

This is my agony and sorrow. So I want to tell the hon. Minister this: before he replies to the Member, the former should apologise to the House for having levelled these charges against the reputed surgeons; who are reputed not only nationally, but internationally also.

Why is there brain drain? Time and again, Members from the Opposition are telling Government in this House that there is brain-drain. If you misbehave in this way, there will definitely be brain-drain. If Dr. Venugopal resigns today, he will get a better job outside. If the Minister likes to see the working conditions of the doctors and the residential physicians, I welcome it.

Dr. Shantilal Mehta Committee has submitted a report. I urge upon the Minister to take action immediately to see the working conditions of the doctors and provide all the necessary facilities. Now, this Institute is not a referral Institute; it is a general hospital also. If Shri Vajpayee suffers from something, he is also going to that Institute.

MR. SPEAKER: God forbid, nobody should suffer from any disease.

DR. KPUPASINDHU BHOI: So many people are going to that Institute even for minor ailments. Now, it has got a national reputation. I have already explained that the allegations made by the hon. Member are not based on facts; and the Minister will look into it and in this particular case he should not alow any enquiry to be conducted or any enquiry commission to be set up so that the moral of the doctors should not be lowered.

SHRI SUDHIR GIRI (Contai): Mr. Speaker, Sir, Mr. Paswan has raised a discussion regarding the functioning of the All India Institute of Medical Sciences and has concentrated it, during the course of his discussion, on the death of an unfortunate Harijan, As a result of this death, much heat has been generated. I extend my sympathy for this unfortunate Harijan who could not get medical help in proper time and as a result succumed to death.

In spite of all this, I do not want to go to the extent of condemning the eminent physicians because they are internationally renowned, and in our country they have earned a great reputation. In the death of this Harijan worker, Mr. Paswan has not only involved the doctors themselves but also the administration the functioning of the administration of the Institute itself. Now, I shall concentrate on the three aspects. (1) This Institute was inaugurated 26 years ago. The then Health Minister Raj Kumari Amrit Kaur, pointed out that this Institute would deal with medical care, research and training. As far as medical care is concerned, originally, it was considered to be an Institute of referral character.

Patients undergoing treatment in different parts of the country are sent to this place on the basis of proper recommendations of medical institutions. But this Institute has lost its character. It is no longer a referral institute. People living in Delhi and people from other parts of the country also come to this Institute even without proper recommendations from other medical institutes or medical colleges.

The pressure of the patients is beyond limits. Why has such pressure been created? Because in and around Delhi, hospitals are not properly maintained and because there is inadequacy of beds and hospitals are generally not kept clean. Patients having some extra funds prefer to visit this Medical Institute, with the result that such a large number of patients come and it becomes difficult for the administration to control them. Therefore, many problems crop up. The state of mental tension of the patients and occasionally the indifferent attitude of the people in the Medical Institute also creates panic among the people. They lodge their complaints with politicians or Ministers or high officials.

As regards the medical care, I would point out that drugs are not given free of cost. There are reports that private doctors send their patients to this Institute for X-ray and other costly tests or examinations. Pace-makers are imported. They are supplied to patients who are critically ill. A pace-maker costs about Rs. 8,000 to 10,000. It is practically impossible for a poor patient to pay such a huge amount.

Senior doctors are not present all the time. It was pointed out that one-third of the senior doctors should be present in the Institute to attend on patients who come to the Institute because they come there after obtaining proper recommendations. But the senior doctors are rarely available and their functions are carried out by junior doctors. Therefore, grievances crop up. Sufficient oxygen is not available. Sir, you are going to ring the bell, I should say. (*Interruptions.*)

MR. SPEAKER: You are very intelligent and far-sighted.

SHRI SUDHIR GIRI: Sufficient oxygen is not available there. I would urge upon the hon. Minister to look into all these factors and why the grievances are increasing.

As regards research work, there are complaints by the Resident Junior Doctors that their research works are being used by the senior faculty members for their own promotion. Not only that, junior doctors are also terrorised.

As regards training, there is frustration among the doctors. Out of 100 junior doctors, only 30 senior doctors are selected for training. And out of 30 senior doctors only one doctor is selected as lecturer. Government should look into this.

As I have no time, I would suggest some points for the consideration of the Minister.

One-third of the senior doctors should remain present in the hospital to attend to patients who are coming from other hospitals in dfferent parts of the country. Punctuality should be maintained because many doctors do not come to the hospital in time. Private ward should be expanded because in this private ward VIPs are treated. Casualty Ward should also be expanded. Social workers should be engaged for guidance and counselling to the patients. Distribution of seats in medicine should be made. Sufficient oxygen cylinders should be made available. Research should be conducted in relevance to the Indian conditions and not in relevance to the Western conditions. Unnecessary bureaucratic interference must be avoided. Pace-makers should be made indigenously.

PROF. SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta—South): It is a 10-point programme.

SHRI SUDHIR GIRI: I would request the Minister to consider all these things and then arrive at a decision.

श्री राजेश कुमार सिंह (फिरोजाबाद) : अध्यक्ष महोदय, यहां आज बड़े गंभीर

[श्री राजेश कुमार सिंह]

विषय पर चर्चा हो रही है। चर्चा का विषय कुछ दिन पहले ही प्रारम्भ हो गया, एक अजीब सा प्रेसीडेंस स्थापित होने जा रहा है। आपकी अनुमति से नियम 377 के अन्तर्गत श्री राम विलास पासवान ने इस विषय पर सदन और सरकार का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया और वह एक गजब बन गया।

माननीय मंत्री जी के जो बयान राज्य-सभा में हुए और हमारे डाक्टर साहब ने जो यहां कहा डाक्टर होने के नाते हो सकता है कि उनके दिल में डाक्टरों के प्रति मोहब्बत हो, मेरे दिल में भी डाक्टरों के प्रति बड़ी इज्जत है। मैं कहना चाहूंगा कि यदि उन्होंने संसदीय प्रणाली तथा व्यवहार में श्री कौल व शकधर वाली बात देखी हो, मैं क्वोट कर रहा हूं--

"संसद या समिति में कही गयी किसी बात या दिये गये किसी मत के सम्बन्ध में सम्पूर्ण विशेषाधिकार दिया गया है जिससे कि सदस्य अपनी बात कहते हुए डरे नहीं और अबाघ रूप से अपने विचार प्रकट करे। इस प्रकार सदस्य को न्यायालयों की कार्यवाही से पूरा संरक्षण प्रदान किया गया है, चाहे वह जानता हो कि उसने जो कुछ कहा है, वह झूठ है तथा द्वेष की भावना से कहा है।"

यह मेरी बात नहीं है, यह कलकत्ता हाई कर्ट को रूलिंग है--सुरेश चन्द बनर्जी और अन्य बनाम पुनीत गोशाला-- आई. इ. टि., कलकत्ता-176।

श्री रणवीर सिंह (केसरगंज) : होगी।

श्री राजेश कुमार सिंह : होगी, आप सुनिये तो सही।

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाड़ा) : अध्यक्ष महोदय "झूठ" इसमें अनपार्लियामेंटरी है, इसको निकाल दीजिये।

(व्यवधान)

श्री राजेश कुमार सिंह : माननीय सदस्य ने जो रिमार्क्स की बात कही है, जब आपने किसी चीज की अनुमति दे दी तो उसका मकसद यह होता है कि सरकार और सदन का ध्यान उस पर आकर्षित करना है।

श्री रणवीर सिंह : यह रूलिंग बिल्कुल इस केस में एप्लीकेवल नहीं है। उन्हें ऐसी रूलिंग साइट करनी चाहिये जो इस केस में एप्लीकेबल हो।

अगर वह समझते हैं कि श्री पासवान ने झूठ कहा है, तब यह रूलिंग लागू होगा।]

19 hrs.

श्री राजेश कुमार सिंह : अगर श्री पासवान ने इस सदन में कहा है कि मैंने जो दोषारोपण किया है, जो एलीगेशन्ज और चार्जिज लगाए हैं, मैं उनका सुबूत दे रहा हूं, तो फिर इसपर एनक्वारी क्यों नहीं बैठ सकती? क्या इस लिए कि वे एमिनेंट पीपल हैं? अगर वे एमिनेंट हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे सुपर-ह्यूमेन हैं और एबाव दि ला हैं। क्या इस का मतलब यह है कि एमिनेंट पीपल होने के नाते वे कानून के साथ खिलवाड़ करें?

मंत्री महोदय ने राज्य सभा में कहा था:--

I as president of the institute have gone through the records of the institute pertaining to these allegations.

आगे वह कहते हैं:--

There was no sufficient reason to entrust the enquiry to any independent today of experts.

मंत्री महोदय ने कहा कि इस बारे में एनक्वारी कराने के सफिशेंट रीजन्ज नहीं हैं। अब तो सफिशेंट रीजन्ज उनके सामने आ गए हैं। वह यह बात कह कर लोगों का दिमाग नहीं बदल सकते हैं। आज इस मेडिकल इंस्टीट्यूट की हालत यह है कि जो गांव का आदमी सड़क पर बैठता है, भूखा-प्यासा रहता है और गांव में अपनी जमीन बेच कर यहां आता है, वह भी हमारे जैसे लोगों मे कहता है कि प्राइवेट वार्ड में भर्ती करा दीजिए, जेनरल वार्ड में देख-भाल नहीं होगी। इस पद्धति को बदलने की जरूरत है। अगर आप उसको नहीं बदलेंगे तो देश में एक भयंकर स्थिति पैदा हो जायेगी।

अगर कोई बड़ा आदमी है, तो वह इस देश की जमीन से बना है, इस देश के पैसे

से बना है । सरकार और देश ने करोड़ों रुपया उसकी पढ़ाई-लिखाई पर खर्च किया है । वह कहीं ऊपर से नहीं आया है । इस बारे में गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है ।

माननीय सदस्य ने जो एलीगेशन्ज लगाए हैं, मैं उनका पूरा समर्थन करते हुए कहना चाहता हूं कि यदि इसमें सच्चाई है, तो डरने की बात नहीं है । मुझे डा. गोपीनाथ और वेणु गोपाल से व्यक्तिगत रूप से कोई द्वेष नहीं है । मैं समझता हूं कि जब पार्लियामेंट में यह मामला उठाया गया, तो उन्हें सच्चाई के साथ कह देना चाहिए था कि हमारे खिलाफ जो एलीगेशन्ज हैं, उनकी एनक्वारी कराई जाए । सच्चाई सामने आ जाती । लेकिन मंत्री महोदय ने सच्चाई पर पर्दा डालने की कोशिश की । उन्होंने कहा :—

I had talked to the Director and through the director the academic community of the institute that I have been always supporting them and my continued support will be there always.

मंत्री महोदय ने बगैर एनक्वारी किए हुए कैसे सपोर्ट दे दी ? इसका मतलब यह है कि उनके इशारे पर यह सारा काम होता रहा और उन्होंने जान-बूझ कर पार्लियामेंट की मर्यादा का हनन किया ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, आल-इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट के साथ मेरा गहरा सम्बन्ध है केवल संसद्-सदस्य के नाते नहीं । इंस्टीट्यूट मेरे चुनाव-क्षेत्र में है, एक नाता तो वह है । लेकिन बड़ा नाता मरीज का नाता है । अगर आज मैं जीवित हूं, चलने-फिरने की स्थिति में हूं, सारे देश में दौड़ सकता हूं, तो उसका श्रेय इंस्टीट्यूट के डाक्टरों को है । मैं उनका आभारी हूं ।

माननीय सदय, श्री राम विलास पासवान ने आपकी अनुमति से नियम 377 के अन्तर्गत यहां पर एक गर्म मामला उठाया और उसमें उन्होंने दो डाक्टरों पर गम्भीर आरोप लगाये । श्री पासवान इस सदन के बड़े सक्रिय सदस्य हैं जब वह किसी मामले को उठाते हैं, तो गर्मजोशी के साथ उठाते हैं । लेकिन अगर डाक्टरों पर आरोप लगेंगे, तो डाक्टर उनका खंडन करने के लिये नहीं आ सकते । यह स्वास्थ्य मंत्री की जिम्मेदारी थी कि वह उन आरोपों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और जल्दी से जल्दी सदन को विश्वास में लेते । श्री पासवान ने 4 मार्च को मामला उठाया और चर्चा हो रही है 26 मार्च को । यह जो बीच में समय बीता है इसमें डाक्टरों को परेशानी हुई है और श्री पासवान की वेदना बढ़ी है । आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट न केवल आलोचना का बल्कि सार्वजनिक आक्षेप का विषय बन गया है । इस स्थिति को टाला जा सकता था अगर स्वास्थ्य मंत्री तत्काल श्री पासवान द्वारा लगाए गए आरोपों के सम्बन्ध में जांच शुरू कर देते ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे भी कहूंगा कि नियम 377 में सदस्य मामले उठाते हैं लेकिन मंत्री महोदय को जवाब देना जरूरी नहीं है । इस प्रकार मामले अधर में लटके रहते हैं । लेकिन यह मामला नाजुक था । सदन में दो डाक्टरों के बारे में कहा गया था । उन डाक्टरों से मेरा व्यक्तिगत परिचय है । श्री पासवान की भावनाओं की मैं कद्र करता हूं लेकिन उन्होंने सुनी-सुनाई, दूसरों से प्राप्त जानकारी के आधार पर जो कुछ कहा है—उन्हें यह मानना चाहिए—उसमें कुछ थोड़ा-बहुत कम ज्यादा हो सकता है । डा. गोपी नाथ और डा. वेणु गोपाल केवल आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट के स्तम्भ नहीं हैं, चिकित्सा के अपने क्षेत्र में सारे देश में उनका विशिष्ट स्थान है । यह ठीक है कि बात का बतंगड़ बनता गया । पासवान जी ने ठीक कहा, उन्होंने सिर्फ कहा था कि एक सर्जन जो प्रोफेसर थे, हृदय शल्य विभाग के प्रधान भी हैं, उन्हें आंख की बीमारी है, उन्हें कम दिखाई पड़ता है । लेकिन बाहर यह चीज फैली कि संसत्सदस्य ने एक डाक्टर को अंधा बता दिया । उन्होंने बताया नहीं, मगर बाहर यह प्रचार चला । अब कम तो मुझे भी दिखाई देता है इसीलिए पढ़ने के लिए मैं चश्मा लगाता हूं ।। **(व्यवधान)**

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

अध्यक्ष जी, आप तो दूरदृष्टि रखते हैं, आप दूर तक देख सकते हैं। डाक्टर भी बीमार हो सकते हैं। डा. गोपी नाथ बीमार थे। कई महीने तक, मुझे मालूम है बीच-बीच में छुट्टियां लेते थे लेकिन इस आधार पर यह निष्कर्ष निकालना कि वे आपरेशन नहीं कर सकते थे, हृदय जैसे गम्भीर अंग का आपरेशन नहीं कर सकते थे—यह ठीक नहीं होगा। मैं जानता हूं जिस दिन डा. गोपी नाथ यह समझेंगे कि वे आपरेशन नहीं कर सकते, वे आपरेशन थिएटर में नहीं जायेंगे।

डा. गोपी नाथ और डा. वेणु गोपाल पैसा कमाने के लिए वहां पर नहीं हैं। हम उन्हें देते क्या हैं? अगर वे मेडिकल इंस्टीट्यूट छोड़ कर प्राइवेट प्रैक्टिस शुरू कर दें तो 30-40 हजार रुपया महीना कमा सकते हैं। अभी अभी मेरा आपरेशन करने वाले डा. आत्म प्रकाश की मृत्यु हो गई। शासन उन्हें सम्मानित कर चुका है—उन्हें पहले पद्मश्री मिला और फिर पद्म-विभूषण मिला। मैं उनके घर की हालत जानता हूं, कर्जा चढ़ा हुआ है, मकान अधूरा बना पड़ा है और बच्चों की पढ़ाई कैसे चले, उनकी पत्नी इस चिन्ता में है। यदि डा. आत्म प्रकाश इंस्टीट्यूट को छोड़ दिए होते और अपना क्लिनिक खोल कर बैठ गए होते तो उनके जाने के बाद आज उनकी पत्नी को कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं होती। लेकिन आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में और मेडिकल प्रोफेशन में ऐसी डाक्टर हैं जिनके लिए आदर्शवाक्य यह है :—

कामये दु:खतप्तानां
प्राणि नामार्तिनाशनं

वे मेडिकल प्रोफेशन में आए तो धन कमाने के लिए नहीं, सेवा की भावना उनको वहां खींच लाई। हमें उसकी कद्र करनी चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस मामले में और दूसरे मामलों में कमियां होती हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि सभी डाक्टर ऐसे हैं जिनके खिलाफ शिकायतें नहीं हो सकती हैं। शिकायत हो सकती है, आल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में कमियां हैं। मैं 25 सालों से देख रहा हूं मेडिकल इंस्टीट्यूट का स्तर गिरता जा रहा है। एक कारण तो यह है कि आज देश में सभी चीजों में गिरावट आ रही है तो मेडिकल इंस्टीट्यूट अपवाद कैसे रह सकता है?

श्री रण वीर सिंह : आप राजनीति ले आये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : मैं राजनीति नहीं लाया हूं।

श्री रण वीर सिंह : आप बहुत अच्छा बोल रहे थे, लेकिन राजनीति ले आये। विरोधी दलों में भी गिरावट आ गई है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं सब को कह रहा हूं। कभी डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी यहां बैठते थे, आज मैं बैठा हूं—स्तर गिरा है। कभी गृह मंत्री के पद पर सरदार पटेल बैठा करते थे. . . .

श्री मनी राम बागड़ी (हिसार) : आज भी सरदार हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सरदार हैं, मगर पटेल नहीं है। मैं इस में जाना नहीं चाहता हूं, मै इस में राजनीति को लाना नहीं चाहता हूं। मगर एक बात कहना चाहता हूं, जैसे हमारे यहां राजनीति में बीमारी ज्यादा है, वैसे ही डाक्टरों में भी राजनीति ज्यादा है। आल इण्डिया मेडिकल इंस्टीचूट ही नहीं और दूसरे अस्पताल भी इस के शिकार हो गये हैं। मैं अपने मित्र पासवान से कहूंगा—रेजिडेन्ट डाक्टर क्या कहते हैं, उस को जरूर सुनें, मगर केवल उन के कहने के आधार पर ही सारे नतीजे न निकालें।

श्री रामविलास पासवान : वाजपेयी जी, आप का इलाज अच्छा हो गया, चूंकि आप बड़े नेता हैं, इस लिए आप अपने आधार पर ही सब निष्कर्ष मत निकालिये। आप का तो सब जगह इलाज अच्छा होता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह गलत है।

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा) : यही बुनियादी प्रश्न है, इस का जवाब देना चाहिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं जवाब दूंगा । वैसे इस बहस का जवाब तो स्वास्थ्य मंत्री जी देंगे, मुझे नहीं देना है । लेकिन मैं कहना चाहता हूं, जूनियर डाक्टरों और सीनियर डाक्टर्स में खींचातान रहती है, जूनियर डाक्टरों की बात में भी दम हो सकता है, उसके बारे में आप पता लगाइये, आल इण्डिया मैडिकल इंस्टीच्यूट उसके बारे में जांच करा सकती है । लेकिन अगर सीनियर और जूनियर डाक्टरों की परस्पर प्रतिस्पर्धा और एक-दूसरे को साथ ले कर न चलने की उनकी अक्षमता के कारण अगर मामले सदन में उठेंगे तो उसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे ।

अध्यक्ष महोदय, अच्छा होता हमारे मित्र पासवान कुछ बुनियादी सवालों पर अंगुली रखते. . . .

श्री राम विलास पासवान : हम ने रखी है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : असली समस्या अस्पताल में भीड़ की है । आप कार्डियक क्लीनिक को ले लीजिए । मुझे मालूम है 30 हजार, 35 हजार, मरीज आते हैं, जिन में 8-9 हजार मरीज नये होते हैं । 15-16 हजार ऐसे होते हैं जिन का "कैथेटराइजेशन" कराना जरूरी होता है, मगर इन्तजाम केवल 500 मरीजों का है, बिस्तर हैं केवल 40 । श्री पासवान की वेदना को मैं समझ सकता हूं । मैं पिछले दो दिनों से पश्चिम चम्पारन से आये हुए एक नौजवान को कार्डियालोजी विभाग में इन्डोर पेशेन्ट के रूप में भर्ती कराने की कोशिश कर रहा हूं । मैं किसी की शिकायत नहीं करूंगा--मगर बिस्तर नहीं हैं । डाक्टर आगे का समय दे रहे हैं, मगर मरीज के पास समय नहीं है । अब इसका जवाब देना स्वास्थ्य मंत्री का काम है, डाक्टर जितने मरीज आयें सबको भर्ती कर सकते हैं, लेकिन बिस्तर बढ़ाइये, इंस्टीच्यूट के लिये पैसा दीजिये । क्षमा कीजिये--आउट-आफ-टर्न एडमीशन्ज होते हैं । अगर पार्लियामेन्ट का कोई मेम्बर फोन कर देगा तो उसकी बात जरा ध्यान से सुनी जाती है . . . **(व्यवधान)** . . . सरकारी अफसर हैं, मंत्री मंडल हैं, प्रदेश के मंत्री हैं . . .

एक माननीय सदस्य : सीनियर्स की सुनी जाती है । आप की बात से आपकी पार्टी के कुलीग्ज एग्री नहीं करते ।

श्री रणवीर सिंह : आप के यहां भी यही हाल है--सीनियर्स और जूनियर्स का सवाल है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुश्किल यह है कि इधर सब जूनियर्स इकट्ठे हो गये हैं ।

एक तरफ भीड़ है, दूसरी तरफ धन की कमी है । हृदय में लगाने के लिए वाल्व के लिये पैसा चाहिये । बम्बई म्युनिसिपल कारपोरेशन वाल्व मुफ्त दे रहा है । आल इन्डिया इंस्टीट्यूट का डाक्टर कहता है कि अगर पेस-सेटर लगवाना है, वाल्व लगवाना है, तो पैसा लाओ, पैसा जमा करो । मैं जानता हूं कि बिहार से अगर कोई हरिजन बंधु आएगा और मौत सामने खड़ी है और उस के इलाज में देर होगी और जिस तरह से श्री पासवान की मृत्यु हुई, उस तरह से किसी और की मृत्यु हो जाएगी, तो हमारे भावुक मित्र के हृदय में जरूर चोट लगेगी, मगर हमें यथार्थ को देखना पड़ेगा ।

एक बात और कहना चाहता हूं । इस तरह की जब मृत्यु हो जाती है वह तो प्रकाश में आ जाती है मगर जो सैंकड़ों मरीज ठीक हो कर चले जाते हैं, उनका इतना उल्लेख नहीं होता है । 7 साल का बच्चा इस समय कारडियेक वार्ड में पड़ा हुआ है और अच्छा हो रहा है । उसका इस तरह व आपरेशन हुआ कि जो हिन्दुस्तान में एक मिसाल कायम करेगा

अध्यक्ष महोदय, मैं डा. वेणुगोपाल को जानता हूं । डाक्टरी के अलावा उनको और कोई व्यसन नहीं है । भोजन नहीं, नींद नहीं, बिना खाए हुए आपरेशन में लगे हुए हैं । और मूर्छित हुए होंगे, तो मिरगी के कारण नहीं बल्कि ज्यादा काम करने के कारण, भूखे रहने के कारण । उनके जीवन को मैंने देखा है । अब पासवान जी कहेंगे कि आप को उन्होंने देखा है, इसलिए आप तो उनकी तारीफ करेंगे ही । मैं बताना चाहता हूं कि उन्होंने मेरा इलाज नहीं किया है । मैं आपको डा. गोपी नाथ

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

के बारे में एक घटना सुनाना चाहता हूं। इमर्जेन्सी के दौरान मुझे आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में भर्ती किया गया था। बंगलोर में मेरा आपरेशन कर दिया गया था और कहा गया था कि मुझे एपेंडीसाइटिस है और मेरी एपेंडिक्स निकालनी है। चीरा लगा दिया गया। बाद में पता लगा कि एपेंडिक्स तो पहले ही निकाली जा चुकी है। घाव भरा नहीं और सेप्टिक हो गया। मैंने प्रधान मंत्री जी को लिखा कि मैं आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडीकल साइंसेज में जाना चाहता हूं। मैं जब से पार्लियामेंट का मेम्बर बना हूं, आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में इलाज कराता रहा हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि एक दाई-इलेक्शन हो। इसलिए मैं और अस्पतालों में नहीं जाता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : भगवान आप की इच्छा पूर्ण करे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं साढ़े चार महीने बिस्तर पर था। मेरी डिस्क निकाली गई और डाक्टरों ने कहा कि इनको घूमना चाहिये। पुलिस पहरा लगा था, नीचे आ नहीं सकते थे। आधी रात में मुझे सातवीं मंजिल पर ले जाया जाता था और मेरे साथ एक पुलिस वाला रहता था। एक दिन डा. गोपी नाथ से मेरी मुलाकात हो गई। साढ़े 11 बजे थे। मैंने कहा कि डाक्टर साहब, आप क्या कर रहे हैं। कहने लगे, इमर्जेन्सी। फिर मुझ से पूछने लगे कि आप क्या कर रहे हैं, तो मैंने कहा मेरे लिए भी इमर्जेन्सी। डाक्टरों के लिए कोई समय का बंधन नहीं है। डाक्टर परिश्रम करते हैं डाक्टरों में ऐसे भी लोग हैं जिन से शिकायत हो सकती है मगर जनरेलाइजेशन नहीं होना चाहिए, स्वीपिंग रिमार्कस मत करिये। यह ठीक है कि पासवान जी ने जो एक मामला उठाया है, जिसकी मृत्यु हो गई, उसमें एक छोटी सी बात थी, जो मुझे भी खटकी। उन्होंने कहा कि एब्सेस हो गया था और आपरेशन नहीं हो सकता था लेकिन एब्सेस को ड्रेन करने का काम जल्दी क्यों नहीं हुआ। उस मरीज को ओ.पी.डी. में क्यों भेजा गया, यह मैं जानना चाहूंगा। मैंने भी उस पर्चे को देखा है, जो ये लाए हैं। इन्होंने बड़ी मेहनत की है। अब ओ. पी. डी. में जाएगा, तो ओ. पी. डी. में तो बहुत भीड़ होती है और ओ. पी. डी. में घुसना मुश्किल है। मैं जानता हूं कि आजकल कुमुदबेन जोशी अस्पतालों का दौरा कर रही हैं और थोड़े दिन पहले वह सफदरजंग अस्पताल गई थीं और वहां के एक डिपार्टमेंट में वे 9 बजे गई थीं और लोग आए नहीं थे, तो वे रजिस्टर पर दस्तख्त कर आई थीं और मैं समझता हूं कि अब अस्पतालों में भी थोड़ी सी चेतना आ रही है।

मंत्री महोदय भी आल इन्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडीकल साइसेज में मरीज रह चुके हैं और अब तो वे सर्वेसर्वा हैं। आल इन्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडीकल साइंसेज की जो कमियां हैं, वे उनको मालूम हैं।

अध्यक्ष महोदय : अब बतौर सुपरवाइजर के उन को भेजेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मगर यह कहना ठीक नहीं है कि आल इन्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज आटोनोमस है। कहां है आटोनामी जब मंत्री उसका चेयरमैन हो जाता है। ऐसी हालत में आटोनोमी कहां रहेगी। आटोनामी होनी चाहिए। मैं आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज की नहीं बल्कि दिल्ली के सारे अस्पतालों की बात कहता हूं।

एक माननीय सदस्य: आप सारे हिन्दुस्तान के अस्पतालों की बात कहें, आप देश के नेता हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मगर देश ने मुझे चुन कर नहीं भेजा है, मुझे नई दिल्ली वालों ने चुन कर भेजा है।

अध्यक्ष महोदय, इस बात को नोट करना होगा कि मामला आल इन्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट का है मगर पासवान साहब ने और डिपार्टमेंटों की चर्चा नहीं की है। उनको जो भी शिकायतें हैं।

अध्यक्ष महोदय : शिकायतें दूर होनी चाहिएं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वे एक विभाग के साथ सम्बन्धित हैं। मगर आल इंडिया मेडिकल इंस्टीच्यूट में और भी विभाग हैं। वहां अच्छे काम भी हो रहे हैं। कहीं कहीं असावधानी भी हो जाती है। मगर जिसका मरीज मर जाएगा तो उसके लिए इस से बड़ी और कोई दूसरी दुःख की बात नहीं है। यह एक तथ्य है। लेकिन दूसरा भी तथ्य है उसको भी हमें देखना होगा।

अध्यक्ष महोदय, समाप्त करने से पहले में एक घटना का जिक्र करना चाहता हूं। मैं जब वहां भर्ती था तो एक छोटी-सी बच्ची भी भर्ती की गयी थी। डिहाईड्रेशन का केस था। उस बच्ची को डाक्टर बचाने की कोशिश करते रहे, रात भर परिश्रम करते रहे। सुबह के समय थोड़ी देर के लिए वह डाक्टर चाय पीने के लिए चला गया। उस दौरान वह बच्ची मर गयी। फिर क्या था कि उसकी मां ने उस डाक्टर का गला पकड़ लिया। अब एक डाक्टर ने रात भर काम किया हो, उसे चाय पीने का समय तो मिलना ही चाहिए। फिर उसे दूसरे मरीजों को भी देखना है, दूसरे बच्चों को भी देखना है। लेकिन भीड़ ज्यादा होने से डाक्टरों को कभी कभी चाय पीने तक का वक्त नहीं मिलता है। इस से साफ है कि कहीं न कहीं कोई कमी जरूर है। जो कमियां हैं उन्हें दूर किया जाना चाहिए। मगर हम अपने डाक्टरों का मनोबल न तोड़ें। जो डाक्टर अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते हैं, उनके आचरण की जांच का विषय बनाना चाहिए कि हर डाक्टर हताश हो करना चाहिए कि हर डाक्टर हताश हो जाए। वैसे ही हमारे अच्छे अच्छे डाक्टर देश को छोड़ कर जा रहे हैं। इसे मैं बहुत अच्छी बात नहीं मानता। अगर हम उन्हें अच्छी सुविधाएं, अच्छी तनख्वाहें नहीं दे सकते तो कम से कम हम उनके अच्छे काम के लिये उनकी पीठ तो थपथपाएं। अगर आलोचना भी करें तो इस भाव से न करें कि वे अपमानित महसूस न करें।

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : अध्यक्ष महोदय, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषण को मैंने सुना। उन्होंने यह सही बात कही है कि हमारे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में जो डाक्टर हैं और जो उनका काम करने का तरीका है, वह हमारे देश के लोगों के लिए, जनता के लिए, हम सभी के लिए बहुत ही अच्छा है और हम सब उनकी योग्यता, कार्यक्षमता, कुशलता और कर्मठता का बहुत आदर करते हैं। हम में से किसी का भी इरादा उनमें से किसी को भी अपमानित करने का नहीं है।

लेकिन चार मार्च को जब श्री राम विलास पासवान जी ने नियम 377 के अन्तर्गत एक मामला सदन में रखा तो उसमें उन्होंने कहीं यह नहीं कहा था कि कोई माननीय डाक्टर साहब अंधे हैं। लेकिन उसका इतना प्रचार देश के अन्दर हुआ कि श्री राम विलास जी ने बहुत गैरजिम्मेदाराना बात एक डाक्टर के खिलाफ कही है। अगर ऐसी बात वे कहे होते तो मैं भी यह कहता कि श्री राम विलास जी को ऐसा वक्तव्य नहीं देना चाहिए था, समझ बूझ कर वक्तव्य देना चाहिए था। लेकिन उनका वक्तव्य पढ़ने से यह साफ जाहिर हो जाता है कि उन्होंने यह कहा था कि एक डाक्टर की आंख खराब है। (व्यवधान) लेकिन जब यह समस्या सामने आयी तो उसका कंट्राडिक्शन तो होना चाहिए था। क्योंकि लोक सभा में जो चीज आ जाती है वह पब्लिक की हो जाती है। इसको सभी जानते हैं। लेकिन इसका मंत्री जी के द्वारा या अन्य किसी के द्वारा कोई खण्डन नहीं किया गया। इसीलिए यह सारा विवाद बढ़ा। पासवान जी का कहना है कि श्री नाथु राम पासवान को भर्ती करने की बात थी और उसमें लापरवाही बरती गयी। उन्होंने जो भी तथ्य सामने रखे हैं, उससे ऐसा लगता है कि थोड़े-थोड़े दिनों के अंतर से मरीज को बुलाया जाता था और कह दिया जाता था कि अगली तारीख को आइये। यह किसी भी वजह से रहा हो, चाहे बिस्तरों की कमी की वजह से या डाक्टर को और दूसरे काम रहे हों, दूसरे मरीजों को देखना हो, जिस कारण से भी हुआ, लेकिन उसका नतीजा अंतिम रूप में यह हुआ कि उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई और यह बहुत चिंता का विषय है, हम सब लोगों के लिए, सारे देश के लोगों

[श्री हरिकेश बहादुर]

के लिए, गरीब लोगों के लिए, उनके हित संरक्षण के लिए, कमजोर वर्गों के लिए।

यह बहुत विडंबना है कि लोगों के साथ अलग-अलग व्यवहार होता है, यहां तक कि जो वरिष्ठ संसद सदस्य हैं, चाहे वे पक्ष के हों या विपक्ष के हों, जब वे जाते हैं तो उन की देखरेख बहुत अच्छी तरह से होती है, लेकिन यह भी सुनने में आया है कि ऐसे संसद सदस्य भी हैं, जिन्हें डाक्टरों से मिलने के लिए 3-4 घंटे लाइन में खड़ा होना पड़ा।

एक माननीय सदस्य : आप भी तो गये थे।

श्री हरिकेश बहादुर : मैं अपनी बात नहीं कहना चाहता। मैं अपने लिए नहीं गया था, मेरे एक रिश्तेदार हैं, उनके लिए गया था। मैं किसी की निन्दा करना नहीं चाहता। मैंने मिलने का समय भी लिया था। डा भाटिया हैं, उन्होंने दो बजे का समय दिया था और मैं 5 मिनट पहले ही पहुंच गया था, लेकिन हो सकता कि जरूरी काम से गए हों, तीन बजे वे आए और मैंने उनको बता दिया कि आपने मुझे बुलाया था, उन्होंने कहा कि बाहर बैठिए और एक घंटे बाद उन्होंने बुलाया। उन्होंने मेरी बात सुनी, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि जब मेरी यह हालत है और लोगों की क्या स्थिति होगी (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना हुई थी कि वह इस देश के अंदर आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उच्च कोटि का अनुसंधान करे साथ ही अच्छी औषधि उपलब्ध कराए देश के लगों को। लेकिन वहां पर कुछ विशेष तरह के लोगों की मोनोपाली बन गई है और जब गरीब आदमी जाता है तो उसकी कुछ न कुछ उपेक्षा जरूर होती है। मैं किसी डाक्टर विशेष के बारे में आरोप नहीं लगाना चाहता। भीड़ बहुत अधिक होती है, और कई तरह की परेशानियां हैं, जिनकी वजह से उनकी उपेक्षा होती है। इन परेशानियों को दूर करने के लिए मंत्री जी को कदम उठाने चाहिए और अधिक साधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए। कमियों की ठीक ढंग से, जांच होनी चाहिए।

एक बात मैं जरूर कहूंगा कि जिन डाक्टरों को लेकर विवाद हुआ, वे निर्विवाद रूप से बहुत योग्य डाक्टर हैं। इनके बारे में श्री हेमवती नंदन बहुगुणा और श्री रघुनाथ रेड्डी साहब का भी विचार है कि वे तो बड़े अच्छे डाक्टर हैं, उनके बारे में इतना विवाद क्यों खड़ा किया जा रहा है। तो हम सब इस बात को मानते हैं, हमारे सामने तो कुछ हुआ नहीं, लेकिन जिनके सामने हुआ है और उन्होंने यहां पर जो बात कही है, उनकी जांच कर लेनी चाहिए। माननीय मंत्री जी को कोई बात कहने से पहले जांच कर लेनी चाहिए। जैसा कि माननीय मंत्री जी ने दूसरे सदन में कह दिया कि बिल्कुल निराधार बात कही गई है। ये कहते हैं कि आधार है और प्रमाण रख रहे हैं। इसलिए जांच करने के बाद जो सही बात हो वह कहनी चाहिए। तुरंत यह कह देना चाहिए कि माननीय सदस्य ने गलत कहा है। माननीय सदस्य अपनी बात पर कायम हैं, मंत्री जी अपनी बात पर कायम हैं। (**व्यवधान**) रेजीडेंट डाक्टर का मामला है, उनकी बात कैसे नहीं सुनूंगा। वे जूनियर डाक्टर हैं, मैं जूनियर मेम्बर हूं, 20 साल बाद उन्हीं से मेरा वास्ता पड़ेगा। हम सभी के साथ न्याय करना चाहते हैं।

इसलिए मैं चाहता हूं कि इन मामलों की सही ढंग से जांच होनी चाहिए, उसके बाद मंत्री जी को कोई वक्तव्य देना चाहिए।

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (SHRI B. SHANKARANAND): Mr. Speaker, Sir at the outset—must express my profound regret at the sad demise of the young Harijan boy who is no more. I thought, the House should have joined in expressing its sorrow at his death..

PROF. N. G. RANGA (Guntur): We do.

SHRI B. SHANKARANAND: I could understand the agony and the

fellings of Mr. Paswan, Hon. Member of this House, who took up this case. But I have failed to understand how he could presume that I have levelled allegations against him. His entire talk today in Parliament was directed to this, that the Minister has levelled allegations against him and he had no scope or time to explain them.

I may, for the benefit of the House, read out the statement which I made—of course, not *suo motu*—in response to a Call-Attention in Rajya Sabha, I had to make the statement; I could not have refused. So, the question of privilege in his case does not at all arise. I must inform the House as to what I have said in the Rajya Sabha.

"Mr. Chairman, Sir, on account of certain allegations made by an Hon'ble Member of Parliament in the Lok Sabha, Prof. N. Gopinath, Head of the Department of Cardiac Surgery, All India Institute of Medical Sciences, has intimated his intention to resign from service. Dr. Venugopal, Associate Professor in the same Department, has submitted his resignation."

SHRI RAM VILAS PASWAN: To whom?

SHRI B. SHANKARANAND: I am just quoting what I have said in Rajya Sabha.

"The main allegation relates to the functioning of the Cardiac Surgery Department. *Inter alia*, doubts have been raised about the physical fitness the two seniormost Surgeons.

I have looked into the facts relating to the allegations. The charges made are without foundation.

I have held discussions with the Director and the representatives of the Faculty and reassured them of my continued support. I has also talked to Prof Gopinath, expressed my concern at the situation and have tied to persuade him to reconsider his decision to resign and to prevail upon his colleague. Dr. Venugopal, to do likewise.

Mr. Chairman, Sir, I would like to place on record my deep appreciation of the excellent and dedicated work done by Doctors Gopinatht and Venugopal and other eminent members of the faculty who, with their exemplary devotion to duty, outstanding competence and strenuous efforts have contributed to building up the reputation of the Institute in the country and abroad. It is therefore, but natural that Prof. Gopinath and his colleague have felt agitated and disturbed by the allegations.

The Institute is a centre of excellence and of national importance. It attracts patients from all over the country as well as from neighbouring countries. The pressure on various departments is ever-growing, specially in the super-speciality ones which are amongst a few of their kind in the region. The doctors, specially those serving in the super-speciality departments. thus work under continued heavy pressure, providing services to the largest possible numbers within obtaining facilities.

Sir, I would appeal to the hon'ble Members of this august House to appreciate the circumstances under which our eminent experts have to function. It is, therefore, necessary that we do nothing to demoralise and denigrade them.

I also wish to express my profound regrets at the sad demise of the Harijan youth who was to undergo cardiac surgery at the Institute and offer my sincere condolences and sympathies to the bereaved family."

The House will appreciate that I have not made any allegation against him...

SHRI RAM VILAS PASWAN: You have made. You said:

[Shri B. Shankaranand]

"There was no truth in the allegation that the boy had died due to the negligence of the Institute."

I have quoted the example. I want to lay it on the Table. I have given you, Sir. Kindly inquire into the matter.

SHRI B. SHANKARANAND: I am coming to that. The tragedy is that Mr Paswan is not a doctor. He feels that any person who goes to the hospital can be operated upon imediataely. That is the tragedy.

SHRI RAM VILAS PAWAN: One year it took.

SHRI B. SHANKARANAND: I am coming to that. It is not as though you are the only person sympathetic towards Harijans. I myself and the entire House, including you and all are concerned about it....

SHRI RAM VILAS PASWAN: You also come from that family. So I want you to understand it.

SHRI B. SHANKARANAND: Not only the Scheduled Castes Members but other Members of this House are equally concerned. You must know that death is no respector of the rich or the poor. It does not make any distinction between man and man. It does not make any distinction between the young and the aged. It does not make any distinction between religions, castes or colour or sex. Please think over it. A person goes to the hospital and especially in a case where heart surgery is involved, immediate operation cannot be made. A series of investigations have to be taken and I would say Mr. Paswan should be grateful to the All India Institute of Medical Sciences and the doctors over there. They have treated this boy out of turn and I will show how it is done....

SHRI RAM VILAS PASWAN: He died.

SHRI B. SHANKARANAND: You should have known as Mr. Vajpayee has said, the full facts and then you would have appreciated what has happened...

SHRI RAM VILAS PASWAN: He is no more in this world.

SHRI B. SHANKARANAND: Let us not denigrate the Institute because of lack of knowledge of the facts of the situation. The boy came to the hospital on 2nd January 1981. He was immediately diagnosed as having rheumatic heart disease and some other technical terms are there and he was put on treatment. You will appreciate that within five days the patient was again examined and they said that this is a heart case and he was asken "Are you willing for treatment? and the willingness for the operation was sought. You could imagine a Harijan boy without the aid of anybody has been take care of by the Institute and the doctors within five days of the boy seeking treatment and they told him, "Are you willing for an operation?" When the boy thought that he should be operated upon—I must thank the doctors of the Institute—he was immediately referred to the Cardiac Department and Dr. Sampath further examined the boy and explained to him the risk as also the problems that are involved in the operation because both the valves of the heart needed to be replaced. I must tell to the credit of Dr. Gopinath that when he received the telegram from the boy, the head of the department took personal interest and wrote back to the boy. It was never done. Dr. Gopinath did not leave it to his Assistant or to the junior doctors. He himself wrote back to the boy and the boy was admitted into the hospital on 14th April 1981, when some examination and evaluation was done and the catcheterisation was done on 15-4-81. So within 3 months eatheterisation was made. Otherwise, even for eatheterisation patients have to wait for years. Here the boy was treated within three months. These are the hard facts

you should appreciate....(*Interruptions*). You think that the boy goes and the very day he should be operated? That is the whole tragedy.....

SHRI RAM VILAS PASWAN: I think when money was deposited and when blood was donated, what difficulty was there.

SHRI B. SHANKARANAND: I am coming to that. When you say and attribute negligence to the doctors, I want to refute that.

Mr. Paswan, I am equally concerned at the death of the boy. But, let us not be swayed by emotions. Emotions should not play. Here, we have to think with coolheadness and see the facts as they are—

Again, the boy on 20th April was seen by Cardiac Section who reviewed the carditis data and other things, after his visit. On 22nd April, the patient was sent by Dr. Venugopal who again explained the risk and the blood requirement. But the patient was required to come there on 18-1-82

SHRI RAM VILAS PASWAN: The Minister is wrong there. He first of all came on the 20th April, 1981. That is true. After that, he was asked to come on 15-1-82, after nine months.

SHRI B. SHANKARANAND: I am coming to that. He was given a date for admission on the 15th January 1982. That was the date given here.

SHRI RAM VILAS PASWAN: After nine months.

SHRI B. SHANKARANAND: There are patients who were waiting for two years. (*Interruptions*) Look here. This is not the only case. On the other hand, you must thank the doctors. Within nine months they have given him a date.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY: You have to correct yourself.

SHRI B. SHANKARANAND: This is the Marxist way of talking. You want to correct everything and not yourself. Here the date of admission was given as 15-1-82. The boy did not turn up.

SHRI RAM VILAS PASWAN: The boy turned up. Here is the date. You can see the date.

Mr. Paswan, here it is not the only case. (*Interruptions*). You are not willing to listen.

SHRI RAM VILAS PASWAN: You have been misinformed.

SHRI B. SHANKARANAND: I was not misinformed. I must tell you, Mr. Paswan that the boy had deposited the money. He was required to give blood. All these things were to be done.

SHRI RAM VILAS PASWAN: He had come on the 15th.

SHRI B. SHANKARANAND: You are mixing the things.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में उप-मंत्री (कुमारी कुमुद बेन एम. जोशी): इनको शांति से सुना है, उनको कहिये शांति से सुनें ।

SHRI RAM VILAS PASWAN: You are telling a**. I have given all the photostat copies.

MR. SPEAKER: I think the word used is unparliamentary and it should be expunged.

SHRI B. SHANKARANAND: Mr. Paswan, look here. The patient came and was not admitted on the 22nd. On the 25th he was asked to come. (*Interruptions*).

KUMARI KUMUD BEN M. JOSHI: All the time he is disturbing. He should listen to the Minister.

अध्यक्ष महोदय : आप क्यों गर्म हो रही हैं ?

श्री राम विलास पासवान : मंत्री जी हमेशा कह रहे हैं कि 20 को आया है, मैं हमेशा कहता हूं कि 15 को आया है ।

**Expunged as ordered by the Chair. Chair.

कल को मैं उनके खिलाफ विशेषाधिकार का प्रश्न लाऊंगा तो आप मत कहिये कि मिस्टेक आफ टंग हो गया ।

अध्यक्ष महोदय : आप देख लीजिये शंकरानन्द जी, उनके डाक्युमेंट्स के हिसाब से भी देखना चाहिये ।

SHRI B. SHANKARANAND: Sir, I am stating the facts as they are.

अध्यक्ष महोदय: मैं उसको देख के बता रहा हूं ।

SHRI B. SHANKARANAND: The rest of the things must be also read. Not only that. He is reading the document out of context. The rest of the things should also be read.

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप क्यों चिन्ता करते हैं ?

SHRI B. SHANKARANAND: That is why I am tellng that you cannot speak out something and say something.

AN HON. MEMBER: Just preferable to him. (*Interruptions*).

MR. SPEAKER: That is all right. Pease sit down.

SHRI B. SHANKARANAND: Sir, on 18th the boy is advised that the money should be deposited. On 20th the boy deposited the money. On 22nd the patient came and was not admitted because the beds were not available. Can you attribute any motive to the doctors? Had they any enmity with the boy? What do you want to say? They have been treating patients both rich and poor. Before the doctor the most important person is the patient. They do not go by rich and poor. Mr. Paswan cannot pick up something and ****the doctors. You cannot do that.

SHRI RAM VILAS PASWAN: Sir, what does he mean by *****;

श्री राजेश कुमार सिंह : इन्होंने** कैसे कहा ? वह इस शब्द को वापस लें । उन्होंने अनपार्लियामेंटरी शब्द कहा है ।

MR. SPEAKER: We should not attribute motives to anyone. यह अच्छा नहीं लगता The word used is unparliamentary and is expunged.

SHRI B. SHANKARANAND: Sir, if that has hurt my hon. friend then I am sorry but I don't have any ill-will against him. I said it in the very beginning. I understand his agony for the boy. I did not attribute any motive. (*Interruptions*) Sir, Paswanji said that this boy was sent for abscess and when he appeared for the abscess he was sent to the OPD. The information with me is that Mr. Nathu Paswan was referred to the surgical OPD on 8-2-1982 for drainage of glutial abscess. The abscess was quite deep and it was drained at the casualty on the same day. There was no delay. We could have understood if there was any delay or that was done —if not deliberately—with negligence. But the same day the abscess was drained and the boy was referred to the surgical departments because the doctors are to decide how to operate and when to operate and not the members of Parliament or the House. otherwise this House would have have been another AIIMS. It is only the doctors who know when and how to operate because for them saving of life is more important than destroying it. Is it the intention of Mr. Paswan that the doctors were against that boy? Is it your intention to say that the doctors do not care for the scheduled castes?

Sir, when he made certain allegations in his House I said that those allegations are not correct. I should draw the attention of other hon. Members to al lthose things which be said under Rule 377 and see whether they are correct or not. Sir, he has said such things that I need not go into them otherwise repeating some-

***Expunged as trdered by the Chair.

thing which is not correct is not good. I do not want to repeat what Mr. Paswan said under Rule 377. He may go through it. He made many allegations against these two doctors.

Sir, I am happy that other Members also paid very high tributes to the doctors.

Mr. Vajpayee, while paying tributes also directed something against the Minister.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Yes. You should have come forward with your statement after his statement under Rule 377.

SHRI B. SHANKARANAND: Can you settle the thing with your friend Shri Harikesh Bahadur? He says: तुरन्त यह करना नहीं था

There is difference of opinion between yourself and Harikesh Bahadur. he says, I should not have done immediately; you say, I have committed delay.

HARIKESH BAHADUR: I said the same thing which Shri Atal Bihari Vajpayee said. There is no difference between the opinions of two of us.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: If doctors are attacked who is going to defend them?

SHRI B. SHANKARANAND: Mr. Vajpayee, you are also a patient; I am also a patient. May I ask you.... (*Interruption*) Who prevented you from coming with such a statement in this House till now? May I ask you the same question?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Mr. Speaker would not have allowed me.

SHRI B. SHANKARANAND: Did you give any Calling Attention Notice?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Yes, I had given notice.

SHRI B. SHANKARANAND: Why did you not press it?

SHRI HARIKESH BAHADUR: We had pressed it.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: It is between us. He has no business to refer to that. Let him find out whether we had pressed or not.

SHRI B. SHANKARANAND: In your oratory, please do not try to bring politics into this matter. Let us be honest in our efforts to safeguard the interests of this Institute. You wanted to say something against the Minister.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Yes, I did.

SHRI B. SHANKARANAND: It is my responsibility to know the things fully well before I come to the House and say confidently that this is true and this is false. It is my responsibility to defend the Institute. It is my responsibility to see whatever is true and whatever is false. And if I say something false, I will be held responsible. (*Interruptions*). Sir, I do not want to go into the history of the resignations...

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: You took too long.

SHRI B. SHANKARANAND: You are completely under a wrong impression. May I say that the resignations came to me on the 15th of March and I made a statement on the 18th? I do not want to say all these things to you. I am not late. Before that I had a series of discussions. I had called the doctors. I engured into the facts, to know that the doctors were not at fault. And for this, I took some time. And, having been fully convinced, I went before the House and said that this is the truth. The House must appreciate the stand taken by the Minister and the Government in this regard. Mr. Vajpayee, of course, you have paid very high tributes to the doctors and the Institute; I am happy that you have done. I still request Mr. Paswan, the hon. Member: Let him not be carried away by emotions. Emotions do not help anybody. Man forgets his duty

[Shri B. Shankaranand]

during his emotional imbalance. I don't say imbalance, but I can understand his emotions.

MR. SPEAKER: I wish your advice is heeded, because I need that daily here!

SHRI B. SHANKARANAND: I am fully emotional in defending the Institute.

(Interruptions)

MR. SPEAKER: Especially, at 12 O'clock I need that advice.

SHRI B. SHANKARANAND: I want to give a few facts so that the House will be able to appreciate under what circumstances our doctors were. *(Interruptions)*

श्री राम विलास पासवान : इन्क्वायरी करवाइये न, यह सब क्यों पढ़ रहे हैं ।

SHRI B. SHANKARANAND: Mr. Vajpayee wanted to know what we are doing when the pressure of patients is increasing every day. I wish to inform the House that a centre of cardio-thoracic surgery in the Institute to augment the existing facilities is under construction. It is likely to become operational by the end of the current plan. This is what we are doing within the financial constraints which we have. I wish everyone who comes to the Institute gets admission and is treated, but, with the limited bed capacity that I have, it is very, very difficult.

SHRI HARIKESH BAHADUR: Kindly increase the capacity. I want to increase the capacity of the Institute and I am taking steps to do that with the help and support of this House. *(Interruptions)*

SHRI RAM VILAS PASWAN: What about the doctors in the Safdarjung Hospital which is adjacent to the Medical Institute? *(Interruptions)*.

SHRI B. SHANKARANAND: As Mr. Vajpayee has said, one death is highlighted and saving of thousands of lives are not cared for. Let us not weigh in our mind only the small things which if highlighted, will go against the very image of the Institute. Already we are suffering from brain drain and it has been the problem for this country as to how to retain these people in our country. I must thank the doctors and the surgeons of the Medical Institute and other hospitals. *(Interruptions)*.

SHRI RAM VILAS PASWAN: For what? ..

SHRI B. SHANKARANAND: Because their only motive is service to the people and it is a social motive and they are not doing the service for any great monetary benefit or for anything else. I may inform the hon. Member that people are requesting the Institute authorities that Mr. Gopinath should conduct the operation in the cases.

श्री राम विलास पासवान : डा. टण्डन ने कहा है—जहां डा. वेनु गोपाल 481 करते हैं वहां डा. गोपी नाथ 278 करते हैं ।

SHRI B. SHANKARANAND: Mr. Paswan, in your anguish you are ruining the cause of the nation. Please do not.... *(Interruptions)*.

SHRI RAMVILAS PASWAN: How? *(Interruptions)*. Why don't you enquire into that? Don't try to keep this under the carpet.

यह मामले बहुत पहले से हैं

SHRI B. SHANKARANAND: May I request the hon. Member please do not be trapped by the politics of the junior Doctors?

SHRI RAM VILAS PASWAN: I do not know who are the junior doctors. But you are playing in the hands of the Senior Doctors.

SHRI B. SHANKARANAND: It will be in the interest of the nation to see that the All India Medical Institute functions in a peaceful way for the better service to the humanity.

19.58 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Saturday, March 27, 1982|*Chaitra* 6, 1904 *(Saka)*